	बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय **बाँदा - २१०००१ (उ0प्र0)** **Banda University of Agriculture & Technology, Banda- 210001 (U.P.)**

मौसम आधारित कृषि सलाह

(Agro-Weather Advisory Bulletin No.: 143 /2025) Year: 7th

जिला: बाँदा	**जारी करने की तिथि: 9.12.2025**

क्रम सं	विभाग	सलाह
1-	शाक-भाजी	➢ फ्रांसबीन, पालक, मूली, मेथी, गाजर, शलजम, चुकंदर, लहसुन, सब्जी मटर, बैगन, टमाटर, मिर्च, गोभी वर्गीय फसलों तथा आलू में आवश्यक उर्वरक प्रयोग कर निराई गुड़ाई करके यथा आवश्यक मिट्टी चढ़ा दें। ➢ बैगन, टमाटर, मिर्च व गोभी वर्गीय फसलों में नमी संरक्षण हेतु सुखी घास की पलवार प्रयोग करें।
2-	शस्य-प्रबंधन एवं मृदा-प्रबंधन	**शस्य.प्रबंधन** ➢ राई –सरसों – पिछले माह बोई गई फसल स १५–२० दिन के अन्दर घने पौधे निकालकर उनकी आपस की दूरी १५ सेमी कर देनी चाहिए। ➢ आवश्यकतानुसार सिंचाई करें, सिंचित क्षेत्रों में नत्रजन की टॉप ड्रेशिंग बोआई के २०–२५ दिन बाद पहली सिंचाई पर करें। ➢ गेहूँ –गेहूँ की बोआई यथाशीघ्र पूर्ण कर लें. देर से बोये गेहूँ की बढवार कम होती है और कल्ले भी कम निकलते हैं। ➢ बोआई १८ से २२ सेमी की दुरी पर कतारों पर करें । ➢ छिड़काव विधि में २५ प्रतिशत अधिक बीज का प्रयोग करें। ➢ गेहूँ की बोआई के २२–२५ दिन बाद पहली तथा ४५ से ५० दिन बाद सिंचाई अवश्य करें। ➢ गेहुंसा के रोकथाम के लिए गेहूँ की खड़ी फसल में खरपतवार नियंत्रण हेतु बुआई के ३० दिन बाद सल्फोसल्फ्युरोंन. मेत्सल्फ्युरोंन (टोटल) १६ ग्राम प्रति एकड़ की दर से १५० लीटर पानी में घोल बनाकर छिड्काव करें। ➢ खरपतवारों के प्रभावी नियंत्रण के लिए खरपतवारनाशी का छिड़काव हमेशा फ्लैटफैन नाजेल (कट नाजेल) से करना चाहिए। ➢ फसलों को प्रारंभिक अवस्था में खरपतवारों की प्रतिस्पर्धा से बचने के लिए समय से बोई गई दलहनी, तिलहनी फसलों में निराई गुराई अवस्य प्रारम्भ कर देना चाहिए । ➢ दलहनी फसलों में घास कुल के खरपतवार के नियंत्रण हेतु क्युजालोफोप इथाइल 5ः (टर्गासुपर) के 1000 ग्राम मात्रा का 500 लीटर पानी में घोल बनाकर 20– 22 दिन की अवस्था पर छिड्काव करें।

		मृदा.प्रबंधन ➢ Not received
3-	**पशुपालन प्रबंधन**	➢ वर्तमान समय में सर्दियों का मौसम शुरू हो चूका है। इस मौसम में छोटे बड़े और दुधारू पशुओं के खान–पान व प्रबंधन के प्रति विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। ➢ दुधारू एवं छोटे पशुओं को ठण्ड से बचाव हेतु बाड़े में शेड की व्यवस्था करेंगे। ➢ सभी पशुओं को कृमिनाशक व अन्तः परजीवीनाशक दवाईओं का सेवन कराएंगे। ➢ पशुओं को हरेचारे की व्यवस्था हेतु बरसीम तथा जई की बुआई अवश्य करें। ➢ पशुओं को संतुलित आहार दें। ➢ पशुओं के आहार में खनिज लवण को जरूर सम्मिलित करें। यह शरीर की शारीरिक क्रियाओं को नियंत्रित रखता है। ➢ पशुओं के खिलाने पिलाने में दूध दुहने के स्थान की सफाई रखें तथा शुद्धता का ध्यान रखें।
4–	**कीट-प्रबंधन**	➢ राई/सरसों में आरा मक्खी कीट के नियंत्रण हेतु सिंचाई करें। यदि कीटों की संख्या सिंचाई के बाद भी दिखाई दे तो फ्लूबेंडामाइड 100 ग्राम प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें। ➢ राई/सरसों में पत्ती सुरंगक कीट (लीफ माइनर) व पेंटेड बग कीट के नियंत्रण हेतु फ्लोनीकॉमिड 50 डब्ल्यू जी 80 ग्राम को 200 लीटर पानी में घोलकर प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें। ➢ चना/मटर/ मसूर में कटुआ कीट (कट वर्म) के जैविक नियंत्रण हेतु मेटाराइजियम एनिसोप्ली 2.5 किग्रा0 प्रति हे0 की दर से 400–500 लीटर पानी मे घोलकर सायंकाल छिड़काव करना चाहिये। ➢ मटर में स्टेम फलाई (तने की मक्खी) के नियंत्रण हेतु क्लोरेन्ट्रानिलीप्रोल कीटनाशी की 60 मिलीलीटर मात्रा को 200 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें ।

		➢ सब्जियों में कीटों के नियंत्रण हेतु नीम गिरी 4 प्रतिशत (40 ग्रा0 नीम गिरी का चूर्ण 1 ली0 पानी में) का घोल बनाकर 10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करना चाहिए। ➢ बैगन की फसल में कलंगी एवं फल बेधक कीट के नियंत्रण हेतु 10 मीटर के अन्तराल पर प्रति हेक्टेयर में 100 फेरोमोन ट्रेप लगाकर वयस्क नर कीट पकड़ कर नष्ट कर देना चाहिए व क्लोरेन्ट्रानिलीप्रोल कीटनाशी की 80 मिलीलीटर मात्रा को 200 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति एकड़ की दर से 10 दिन के अन्तराल पर आवश्यकतानुसार छिड़काव करना चाहिए। ➢ टमाटर में फल बेधक सूड़ी के नियंत्रण हेतु एजाडिरैक्टिन 0.15 प्रतिशत की 2.5 लीटर मात्रा को 500–600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे0 की दर से आवश्यकतानुसार 8–10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें। ➢ फूलगोभी, पत्तागोभी में डायमंड बैक मोथ की निगरानी हेतू फेरोमोन प्रपंच 3–4/एकड़ लगाए व बैसिलस थूरिनजिएन्सिस (बी0टी0) 1.0 किग्रा0 प्रति हे0 की दर से 400–500 ली0 पानी में घोलकर आवश्यकतानुसार 10–15 दिन के अन्तराल पर सायंकाल छिडकाव करना चाहिए। रस चूसने वाले कीटों के नियंत्रण हेतु फ्लोनीकॉमिड 50 डब्ल्यू जी 80 ग्राम को 200 लीटर पानी में घोलकर प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें।
5.	**बागवानी. प्रबंधन**	**आम में मुख्य कृषि कार्य** ➢ आम के पेडों में मीलीबग के बच्चों को चढने से रोकने के लिए पोलिथिन की २ फुट चौडी पट्टी कसकर लपेट दें तांकि बच्चे फिसलकर नीचे गिर जाये । फिर इन्हें इकट्ठा करके जला दें। ➢ पाला पडने की सम्भावना हो तो आम के बाग में धुंआ करें। ➢ आवश्यकतानुसार पौधों में नियमित सिंचाई करें. मधुआ कीट एवं पाउडरी मिल्ड्यू के नियंत्रण के लिए मंजर निकलने के समय बैविस्टिन (0.2 प्रतिशत) तथा इमिडाक्लोप्रिड (0.05 प्रतिशत) का पहला छिड़काव करें। **पपीता में मुख्य कृषि कार्य** ➢ पौधों को पाले से बचाने के लिए धुआ करें और बाग में पर्याप्त नमी बनाएं। कच्चे फलों को टाट अथवा बोरे से ढंक दें। ➢ वृक्षारोपण के छः महीने के बाद प्रति पौधा उर्वरक देना चाहिए । नाईट्रोजन – 150 –200 ग्राम, फॉस्फोरस – 200–250 ग्राम, पोटाशियम – 100–150 ग्राम. तीनों उर्वरक 2–3 खुराक में वृक्ष लगाने से पहले फूल आने के समय तथा फल लगने के समय दे देना चाहिए। **केला में मुख्य कृषि कार्य** ➢ आवांछित पुत्तियों (सकर्स) को निकाल दें। यदि फल पकाने लायक हों तो घार को काटकर पकाने के लिए रखे दें। ➢ इस माह के पहले और तीसरे सप्ताह में सिंचाई करें।

- केला बीटल के प्रबंधन हेतु बाग के सफाई करें

बेर में मुख्य कृषि कार्य

- बेर में सफेद चुर्णी रोग दिखाई देने पर घुलनशील गंधक ४०० ग्राम को २०० लीटर पानी में घोलकर पेडों पर छिडकें ।
- फलमक्खी नियंत्रण के लिए 1.5 मि.ली प्रोफेनोफास प्रति लीटर पानी में मिलाकर 15 दिनों के अन्तर पर छिडके।
- फल झडन की रोकथाम हतु एन0 ए0 ए0 बागवानी ग्रेड का 20 पी0पी0म0 की दर से फल मटर के आकार की अवस्था पर 15 दिन के अंतराल पर दो छिडक़ाव करें।
- अपरिपक्व फलों के गिरने को रोकने व उत्तम गुणवत्ता युक्त अधिक उपज के लि, नियमित 10–12 दिन के अंतराल पर सिंचाई करें।

नीबू में मुख्य कृषि कार्य

- पके फलों को तोड़कर बिक्रय हेतु बाजार भेजें।
- छोटे पौधों को 10 किलोग्राम गोबर की खाद और 25 ग्राम फॉस्फोरस प्रति वर्ष के हिसाब से बढ़ाकर दें।
- फलदार पेड़ों में 50 किलोग्राम गोबर की सड़ी हुई खाद और 125 ग्राम फॉस्फोरस प्रति पेड़ के हिसाब से पेड़ के फैलाव में 20 सेमी की गहराई में डालें।
- नीबू में कैंकंर रोग की रोकथाम के लिए २० मि0ग्रा0 स्ट्रप्टोसाइकिलिन को २५ ग्राम कॉपर सल्फेट के साथ २०० लीटर पानी में मिलाकर छिडकाव करें ।

आंवला में मुख्य कृषि कार्य

- फल सड़न रोग की रोकथाम हेतु 500 ग्राम कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 200 लीटर पानी में घोलकर एक छिड़काव करें।
- फलों को तोड़कर बिक्रय हेतु बाजार भेजें।
- तुड़ाई उपरांत फलों को डाइफोलेटान (0.15 प्रतिशत), डाइथेन एम 45 या बैवेस्टीन (0.1 प्रतिशत) से उपचारित करके भण्डारित करने से रोग की रोकथाम की जा सकती है.
- बाग को साफ रखें।

अमरुद में मुख्य कृषि कार्य

- फलों को तोतों व चिड़ियों से सुरक्षा करें ।
- पके फलों को तोड़कर बाजार भेजें।
- बाग की साफ सफाई करें।
- फलमक्खी नियंत्रण के लिए 1.5 मि.ली प्रोफेनोफास प्रति लीटर पानी में मिलाकर फल परिपक्कता के पूर्व 10 दिनों के अंतर पर 2–3 छिड़काव करें।
- प्रभावित फलों को तोड़कर नष्ट कर देना चाहिए तथा बगीचे में फल मक्खी के वयस्क नर को फंसाने के लिए फेरोमोन ट्रेप लगाने चाहिए।

कटहल में मुख्य कृषि कार्य

- फलदार पेड़ों में 50 किलोग्राम गोबर की खाद और 600 ग्राम फॉस्फोरस प्रति पेड़ के हिसाब से पेड़ के फैलाव में दें।

स्ट्राबेरी में मुख्य कृषि कार्य

- दिसंबर माह में रोपण का कार्य पूरा कर लें ।
- खेत तैयारी के समय वर्मीकम्पोस्ट ५ से १० कुंतल , नत्रजन १०० किलोग्राम , फॉस्फोरस ८० किलोग्राम एवं पोटाश ६० किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें ।
- यदि संभव हो तो स्ट्राबेरी की खेती संरक्षित संरचना में करें।

अनार में मुख्य कृषि कार्य

- अम्बे बहार का फलत लेने के लिए ५०० ग्राम नत्रजन , २५० ग्राम फॉस्फोरस एवं ५०० ग्राम पोटाश की मात्रा प्रति पौधा प्रति वर्ष प्रयोग करें ।
- १० से १५ दिन के अंतराल पर सिंचाई करते रहना चाहिए ।

		➢ फल मक्खी के नियंत्रण के लिए प्रोफेनोफोस १.५ मिली लीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
6.	**वानिकी प्रबंधन**	➢ वानिकी पौधशाला में अगले वर्ष के वृक्षारोपण हेतु वृक्ष प्रजातियॉ जैसे शीशम, सिरिस, खैर, गुलमोहर आदि के बीज दिसम्बर माह में एकत्र करें। ➢ उच्च उत्तरजीविता दर सुनिचित करने हेतु सागौन और शीशम के एक साल पुराने पौघों की जड़ौल (रूट–शूट कटिंग) व स्टंप को पौधशाला में तैयार करें । इस कार्य हेतु पौध की मोटाई अंगूठे के बराबर (2.5से0मी0), तने की लंबाई 1.5 से 2.5 से0मी0 तथा मूसला जड़ की लंबाई 15 से 20 से0मी0 रखें। अन्य जड़ों को सावधानीपूर्वक काट दे। तदोपरान्त, तैयार जड़ौल को पॉली बैग में रोपित करें।

वैज्ञानिक सलाहकार मंडल–

1. डॉ जी. एस. पंवार	7. डॉ दिनेश गुप्ता
2. डॉ दिनेश साह	8. डॉ पंकज कुमार ओझा
3. डॉ ए.सी. मिश्रा	9. डॉ सुभाष चंद्र सिंह
4. डॉ ए.के. श्रीवास्तव	10. डॉ जगन्नाथ पाठक
5. डॉ राकेश पाण्डेय	11. डॉ धर्मेन्द्र कुमार
6. डॉ मयंक दुबे	